ISSN: 2393-8048
An International Conference on Basic Education & Computers in India
Sri Vinayak Mahavidhalya, Sri Vijaynagar, Rajasthan
11 June 2017

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श: बदलते सामाजिक सरोकारों का अध्ययन

पृथ्वी राज, विधार्थी (ऍम फील), हिंदी विभाग, महाराजा गंगा सिंह विशवविद्यालय, बीकानेर

सारांश

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श एक महत्वपूर्ण साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार के रूप में उभरकर सामने आया है। आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री को केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित न रखकर उसकी स्वतंत्र पहचान, अस्मिता, अधिकारों और सामाजिक संघर्षों को प्रमुखता दी गई है। स्त्री लेखन ने पितृसत्तात्मक व्यवस्था, लैंगिक असमानता, घरेलू हिंसा, शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता तथा सामाजिक रूढ़ियों जैसे प्रश्नों को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना तथा बदलते सामाजिक परिवेश में स्त्री की स्थिति और उसकी चेतना का विश्लेषण करना है। हिंदी कहानी, उपन्यास, कविता और आत्मकथात्मक साहित्य में स्त्री अनुभवों की विविध अभिव्यक्तियाँ दिखाई देती हैं। यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि स्त्री विमर्श केवल स्त्री की समस्याओं का चित्रण नहीं, बल्कि समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय की व्यापक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। समकालीन हिंदी साहित्य स्त्री को अपनी पहचान और निर्णय लेने की स्वतंत्रता के साथ एक सक्रिय सामाजिक व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करता है।

मुख्य शब्द (Keywords): स्त्री विमर्श, हिंदी साहित्य, स्त्री अस्मिता, पितृसत्ता, लैंगिक समानता, स्त्री चेतना, सामाजिक परिवर्तन